इतिहास - शिक्षण की विभिन्न विधियाँ

शिक्षा में आधुनिक शिक्षण-शास्त्र की उत्पत्ति कॉमेनियस व रूसो के विचारों से मानी जाती है। रूसो स्वयं इस क्षेत्र में लॉक तथा अन्य शिक्षाविदों के विचारों से प्रभावित हुआ था। 18वीं शताब्दी में रूसो ने शिक्षण में सुधार लाने के लिए विभिन्न विचार प्रदान किये। उसका विचार था- "प्रकृति के स्रष्टा के यहाँ से प्रत्येक वस्तु अच्छी आती है, परन्तु मनुष्य के हाथों में आकर वह विकृत हो जाती है।"

रूसो के बाद पेस्टॉलाजी ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया उसने 1800 से 1825 तक अपने सिद्धान्तों एवं विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उसने बालक के स्वाभाविक विकास पर आधारित कर शैक्षिक प्रक्रिया को संगठित कार्यक्रम में परिवर्तित करने का प्रयास किया उसके कार्यों ने आधुनिक शिक्षण-विधियों का सूत्रपात किया। उसके अनुयायियों ने उसके विचारों एवं कार्यों का प्रसार यूरोप तथा अमेरिका तक किया।

आधुनिक शिक्षा दर्शन नवीन मनोविज्ञान तथा नवीन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर आधारित हैं। यह दर्शन बालक को महत्व प्रदान करता है। साथ ही सीखने की प्रक्रिया को गतिशील या सक्रिय मानता है। यह बालक की वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों प्रकार की रुचियों को महत्व प्रदान करता है, और शिक्षा को अनुभवों की पुनर्रचना तथा पुनर्गठन की सतत् प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह शिक्षण को सीखने के निर्देशन के रूप में देखता है।

यह तथा गेरबेरिच ने शिक्षण-विधि को इस प्रकार परिभाषित किया है- करते हुये कहा है कि- "विधि प्रक्रियाओं की वह सुपरिभाषित संरचना है जिसमें परिस्थितियों की माँगों के अनुसार विभिन्न प्रविधियाँ तथा युक्तियाँ निहित होती हैं।"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर ताखा बलिया

इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण-विधियां :-

इतिहास-शिक्षण की कोई विशेष विधि नहीं है। इसका शिक्षण विभिन्न ढंगों एवं साधनों के प्रयोग से किया जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इतिहास एक ऐसा व्यापक विषय है, जिसमें विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों तथा ढंगों का प्रयोग करना पड़ता है।

इस दृष्टि से इसमें निम्नलिखित विधियों को प्रयुक्त किया जा सकता है—

कथात्मक विधि

(STORY-TELLING METHOD)

कथात्मक विधि में कहानी कहना, बातचीत करना, भाषण देना आदि का समावेश होता है, क्योंकि इन सब में वाणी का उपयोग करना पड़ता है। छोटी कक्षाओं में कहानी कहना ही इतिहास सिखाने की सर्वोत्तम विधि है। प्लेटो ने भी इस विधि को छोटे बालकों के लिए लाभप्रद एवं उपयुक्त बताया था। बालक स्वभावतः कहानी-प्रिय होते हैं। कल्पना की उड़ान में उनकी बहुत-सी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का विकास होता है। मानव बाल्यावस्था में तथा वृद्धावस्था में दोनों ही में कहानी सुनने तथा कहने में रुचि प्रदर्शित करता है। कुछ मनुष्यों में कहानी कहने की कला जन्मजात होती है और कुछ व्यक्ति प्रयत्न करके सीख लेते हैं। इतिहास के शिक्षक को इस कला को जानना आवश्यक है। यदि उसमें यह कला स्वाभाविक रूप से नहीं है तो उसे प्रयत्न करके अर्जित करना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो वह सफल शिक्षक नहीं हो सकता तथा अपने छात्रों के साथ पूर्ण न्याय नहीं करेगा।

13/9/20

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान